ग्लोबलवार्मिंग की मार

भारतवर्ष के अत्याधिक प्रदेश शीतकालीन लहर की चपेट में आना सम्भावित्!

प्रो० (डॉ०) भरत राज सिंह

डा0 सिंह पुन: हिमालय के क्षेत्रो में उत्तरांचल, हिमांचल व जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी क्षेत्रो व आसपास इलाकों को अगली वारिश के मौसम की शुरुवात में सावधान करना चाहते हैं कि आने वाला समय पिछले दैविक धटनाओं से अधिक भयावह होगा द्य इनका आकलन 'अमेरिकी न्यूयार्क क्षेत्र अगले दसक में तूफानो से डूब जायेगा' सितम्बर 2012 की प्रकाशित किताब जो क्रोतिया में छपी थी, और 31 अक्तूबर 2012 की घटना जो सैंडी तूफान आने से अत्यधिक प्रभावित हुआ था, जिसके कारण 15 दिन विजली-पानी, हवाई यात्रा बंद रहा। उसके उपरांत ही 2015 में इनकी जलवायु-परिवर्तन की किताब का एक अंश अम्ररीका में हाई स्कूल के कोर्स में सम्मिलित किया गया है।

-डा0 भरत राज सिंह

एक तरफ हम ग्लोबल वार्मिक के विभिन्न अप्रत्यासित घटनाओं के कारण बाढ़, महामारी व वायु प्रदूषण से उबर नहीं पाए हैं। अपितु इस वर्ष भारतवर्ष का विभिन्न क्षेत्रो में अत्यधिक शीतकालीन लहर की सम्भावना से नाकारा नहीं जा सकता है।

डा0 भरत राज सिंह जो एक वरिष्ट प्रयावरणविद व स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंस, लखनऊ के महानिदेशक है, का कहना है की इस वर्ष शीत लहर की मार अधिक होगी तथा भारत के विभिन्न क्षेत्र इससे मार्च क्या अप्रैल 2017 तक प्रभावित रहेंगें। उनका आकलन है की अभी से भारतवर्ष के ओडिशा, तेलन्गाना व महाराष्ट्र में निचला तापमान 10-12 डिग्री सेंटीग्रेड तक आ चुका है। यह भी संम्भावना भारतवर्ष के मैट्रोलोजी विभाग द्वारा आंकी जा रही है कि दिसम्बर 2016 से फरवरी 2017 तक शीतलहर तथा ग्रीष्मऋतु आभाष अप्रैल 2017 से लगभग व.5 से 1 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक महसूस किया जायेगा परन्तु इनके कारणों का कोई ठोस आधार उनके पास नहीं है। उनका कहना है कि 2015 की शीतकालीन समय गर्म गुजरी थी और अभी इस वर्ष ठंडक पड़ना शुरू हो गयी है। उनके अनुसार यह नीनो के कमजोर रहने के कारण ही हो रहा है। तथा यह भी उनका अनुमान है कि यदि ठण्ड का मौसम थोड़ा गरम रहता तो फरा में कमी आ जाती। परन्तु जिस तरीके से ठण्ड ने अपना आगाज दस्तक दी है इस वर्ष 4-6 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान और नीचे शीतकाल मे जाने की सम्भावना महाराष्ट्र व तेलन्गाना जनपद अधिक स्थानों पर रहेगा। इस समय मेडक में 10 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आ चुका है और अभी वर्तमान में पुना में सबसे कम तापमान 9.9 डिग्री सेंटीग्रेड रिकॉर्ड किया गया है। ओडिशा के फुलवानी में 7.6 डिग्री सेंटीग्रेड तथा भवानीपटना व कालाहांडी में 8.7 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आ चुका है। इसके विपरीत हिमांचल प्रदेश के पहाड़ी इलाकों जैसे शिमला, धर्मशाला व नहान में सामान्य से 3.5 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक 11.8 से 12.8 डिग्री सेंटीग्रेड महसूस किया जा रहा है द्य इस पर आईआईटीमैट्रोलोजी, पुना द्वारा शोध किया जा रहा है की आगे की स्तिथि क्या होगी ?

डा0 सिंह का मानना है कि पहाड़ी इलाकों में ग्लोबलवार्मिंग के पिछले प्रभावों से ग्लेशियर की चट्टानें बहुत अधिक पिघल चुकी हैं तथा शीतकालीन मौसम में इनमे अधिक जमाव की संभावना अधिक नहीं है जो भी वर्फ्वारी होगी भी वह ग्लेशियर के तापमान के समतुल्य कम अर्थात नीचे होने से वर्फठस पर जमेंगी नहीं, वल्कि इनका पलायन मैदानी इलाकों में हवा के रुख के अनुसार- दिल्ली, उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश होगा और उनका बहुत सा हिस्सा ठण्ड से अधिक प्रभावी होगी और वंहा पर ठण्ड के मौसम के मार्च/अप्रैल 2017 तक बढ़ने की पूर्ण सम्भावना है।

अभी समुद्र से सटे क्षेत्रीय इलाकों में जंहा अत्यधिक तूफानी वारिश वर्षाऋतु में हुई है वहां पर जलवायु में जल की बूँदो का प्रभाव रहने से शीतकालीन मौसम के शुरू होते ही जहां-जहां छोटे पहाड़ी क्षेत्र हैं वंहा पर हवा में दवाव कम होते ही रात व दिन में तापमान एकाएक कम हो रहा है, जिसका जिक्र मौसम वैज्ञानिक लीनो के पिछले वारिश के मौसम में कमजोर होने का कारण बता रहे है।

आइये ग्लोबलवार्मिंग के कारणों का चिंतन करे और इसको कम करने के उपायों पर शीघ्रता से काम कर, विश्व में जनमानस व जीव-जन्तुओ को बचाने का संकल्प लें तथा पृथ्वी जो माँ तुल्य है, उसके अवयवों का अप्रत्याशित दोहन रोके।